

Padma Bhushan



SMT. VANI JAIRAM (POSTHUMOUS)

Smt. Vani Jairam was an acclaimed singer of exceptional calibre and exquisite artistry. Her remarkable repertoire includes decades of film playback singing in over 19 Indian languages, recordings and live concerts of light-classical Hindustani and Carnatic compositions, devotional Bhajans, Thumris and Abhangs.

2. Born on November 30, 1943 in Tamil Nadu, Smt. Vani received her Bachelor's Degree in Economics from Queen Mary's College, Chennai, and thereafter, took up employment with the State Bank of India. However, it was music that was her destiny and calling. She was a child prodigy who could identify ragas as early as the age of 2. Formally trained in Carnatic classical music by revered masters such as Sri. Cuddalore Srinivasa Iyengar, Sri. T. R. Balasubramanian and R.S. Mani, Smt. Vani Jairam went on to perform on stage and All India Radio from the age of 8.

3. Smt. Vani was trained in Hindustani Music under the exacting tutelage of Ustad Abdul Rahman Khan. Renowned composer Vasant Desai invited her to sing three songs for the Hindi film Guddi, in 1971. 'Bol re papihara', took the country by storm. 'Hum ko man ki shakti dena', another song from the same film, remains the Morning Prayer song in many schools across India, even to this day.

4. Intricate compositions of renowned Hindi film music directors such as Madan Mohan, Naushad, O.P. Nayyar, Jaidev, Laxmikant-Pyarelal and R.D. Burman were soon offered to her. The crowning glory of her career was singing the songs for Pandit Ravi Shankar's magnum opus Meera, directed by Gulzar. Crossing linguistic barriers effortlessly, Smt. Vani Jairam's songs such as 'Odhun to Odhun' in Gujarati, 'Sukhat che hai sukha' in Marathi, 'Seigaan keno Ami' in Bengali, and 'Megha Barasila' in Odiya, are still cherished in the respective states of India. Moving to the South in 1973, Smt. Vani won the hearts of Tamil film music composers instantly. Her Tamil song 'Malligai en mannan mayangum' composed by M.S. Viswanathan was followed by thousands of unforgettable songs of astounding range in Tamil, Kannada, Malayalam and Telugu.

5. Smt. Vani was the recipient of several awards and honours. Her very first film song 'Bol re papi hara' fetched her the prestigious Tansen Samman for best classical song. She was honoured with the coveted National Award for Best Female Playback Singer three times, in 1976, 1980 and 1991. The Tamil Nadu Government conferred 'Kalaimamani' Award and the 'Life Time Achievement' Award. She also got State Awards from Kerala and Gujarat.

6. Smt. Vani passed away on 4th February, 2023.



श्रीमती वाणी जयराम (मरणोपरांत)

श्रीमती वाणी जयराम सुयोग्यता और उत्कृष्ट कलात्मकता युक्त प्रख्यात गायिका थीं। उनके उल्लेखनीय सृजन कर्म में दशकों से 19 से अधिक भारतीय भाषाओं में फिल्म पार्श्व गायन, हिंदुस्तानी और कर्नाटक में सुगम शास्त्रीय संगीत रचनाएं, भजन, ठुमरी और अभंग की रिकॉर्डिंग और लाइव संगीत कार्यक्रम शामिल हैं।

2. 30 नवंबर, 1943 को तमिलनाडु में जन्मी, श्रीमती वाणी ने क्वीन मैरी कॉलेज, चेन्नै से अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और उसके बाद भारतीय स्टेट बैंक में नौकरी की। परंतु उनके भविष्य और नियति में तो संगीत लिखा हुआ था। वह ऐसी बाल प्रतिभा थीं जो दो वर्ष की आयु में ही राग पहचान सकती थीं। श्री कुड्डालोर श्रीनिवास अयंगर, श्री टी. आर. बालासुब्रमण्यन और श्री आर.एस. मणि जैसे सम्मानित संगीत पंडितों द्वारा उन्हें कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की औपचारिक शिक्षा प्रदान की गई। श्रीमती वाणी जयराम ने 8 वर्ष की आयु में मंच और ऑल इंडिया रेडियो पर प्रस्तुति देना शुरू कर दिया था।

3. श्रीमती वाणी को उस्ताद अब्दुल रहमान खान के अनुशासित संरक्षण में हिंदुस्तानी संगीत का प्रशिक्षण दिया गया था। प्रसिद्ध संगीतकार वसंत देसाई ने उन्हें 1971 में हिंदी फिल्म गुड्डी के लिए तीन गीत गाने के लिए आमंत्रित किया। 'बोले रे पपीहरा' ने पूरे देश में धूम मचा दी। इसी फिल्म का एक अन्य गीत 'हमको मन की शक्ति देना' आज भी भारत के कई स्कूलों में सुबह का प्रार्थना गीत बना हुआ है।

4. जल्द ही श्रीमती वाणी को मदन मोहन, नौशाद, ओ.पी. नैय्यर, जयदेव, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल और आर.डी. बर्मन जैसे प्रख्यात हिंदी फिल्म संगीत निर्देशकों द्वारा चुनौतीपूर्ण गीतों की पेशकश की गई। गुलजार द्वारा निर्देशित पंडित रविशंकर की महान कृति मीरा के लिए गायन उनके संगीत जीवन का उत्कर्ष था। भाषाई बाधाओं पर सहजता से विजय प्राप्त करते हुए, श्रीमती वाणी जयराम के गीत जैसे गुजराती में 'ओधुन तो ओधुन', मराठी में 'सुखचेहैसुखा', बंगाली में 'सीगान केनो आमी' और उड़िया में 'मेघा बरसिला' आज भी भारत के इन राज्यों में याद किए जाते हैं। 1973 में दक्षिण में, श्रीमती वाणी ने तुरंत ही तमिल फिल्म संगीतकारों का दिल जीत लिया। श्री एम.एस. विश्वनाथन द्वारा संगीतबद्ध तमिल गीत 'मल्लिगेन मन्नान मयंगम' के बाद तमिल, कन्नड़, मलयालम और तेलुगु में उनके हजारों अविस्मरणीय गीत आए।

5. श्रीमती वाणी को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए थे। उनके पहली ही फिल्मी गीत 'बोल रे पपीहरा' ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ शास्त्रीय गीत के लिए प्रतिष्ठित तानसेन सम्मान दिलवाया। उन्हें 1976, 1980 और 1991 में तीन बार सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। तमिलनाडु सरकार ने 'कलायमामणि' पुरस्कार और 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें केरल और गुजरात के राज्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

6. श्रीमती वाणी का 4 फरवरी, 2023 को देहावसान हो गया।